भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **मार्च** 2001 | **अंक** 3

साहित्यकार राज्यपाल की व्यथा

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल साहित्य मनीषी **पं० विष्णुकान्त शास्त्रीजी** उत्तर प्रदेश से हताश और निराश हैं। उनका कहना है कि स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने और देश को आठ प्रधानमंत्री देने वाला यह प्रदेश अब तक अपने पिछड़ेपन से मुक्ति नहीं हो पाया है। जातिवाद यहाँ भयानक रूप से व्याप्त है। तात्कालिक स्वार्थ के लिए वरिष्ठ राजनेता भी निम्न स्तर तक गिर रहे हैं। विश्वविद्यालयों का बुरा हाल है। यहाँ अधिकारों की बात सब करते हैं, लेकिन कर्त्तव्य की बात कोई नहीं करता।

''सोचा था राजभवन में लिखने-पढ़ने के लिए थोड़ा वक्त निकाल लूँगा। मैं भवानीप्रसाद मिश्र की कविता हमेशा स्मृति में रखता हूँ—'कुछ लिख के सो, कुछ पढ़ के सो। तू जिस जगह से जागा सबेरे, उस जगह से बढ़ के सो।' लेकिन यहाँ राजभवन में जैसे सब कुछ रुक गया हो। गीता पर व्याख्या लिखने की सोची थी। गीता की व्याख्या पर 55 प्रवचन थे। टेप हुए थे। उन्हें संशोधित करना था। लेकिन नहीं कर सकता। अब सिर्फ दो चीज पढ़ता हूँ—अखबार और फाइलें।''

दु:ख और वेदना से लड़ते हुए कुँवरनारायण की पंक्ति वे दुहराते हैं—'कोई दु:ख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं। वही हारा जो लड़ा नहीं।'

''साहित्य में राजनीति का समावेश हो गया है। साहित्य को राजनीति के अंकुश से प्रभावित नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रगति अगर राजनीति से जुड़ जाय तो भविष्य की सम्भावनाएँ कुंठित हो जायेगी, अतिरेक का परिमार्जन आवश्यक है। भूमण्डलीयकरण के नाम पर बंजारन संस्कृति बढ़ रही है।''

—विष्णुकान्त शास्त्री

राष्ट्रीयकरण से निजीकरण की ओर

स्वतंत्रता के बाद बड़ी तेजी से निजी क्षेत्र के विभिन्न उद्योगों तथा उपक्रमों को सार्वजनिक क्षेत्र में राष्ट्रीयकृत किया गया। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के समक्ष एक सुस्पष्ट योजना थी, किन्तु इन्दिरा गाँधी ने राजनीतिक लाभ के लिए ऐसे क्षेत्रों को भी अछूता नहीं छोड़ा जिनका राष्ट्रीयकरण देश के लिए हितकर नहीं रहा।

आजादी के पूर्व जनता में त्याग और बलिदान की भावना थी, किन्तु आज़ादी मिलने के बाद जनता अन्तर्मुखी हो गई और नेताओं के वैभव को देखकर निजी हित और स्वार्थ की ओर बढ़ने लगी। परिणाम यह है कि आज भौतिक राष्ट्रीयता के साथ भावात्मक राष्ट्रीयता से भी हम मुक्त होते गये।

अब पुन: निजीकरण की ओर लौट रहे हैं क्योंकि हमारे नेताओं ने भारत की जनता के समक्ष राष्ट्रीयता और त्याग की निष्ठा का प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया।

शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। इतनी सरकारें आईं और गईं किन्तु राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से शिक्षा की एक योजना नहीं बन सकी। परिणाम यह है कि शिक्षा भी अन्य उद्योगों की तरह उद्योग मात्र बन गई जो निजी क्षेत्र में तेजी से अग्रसर हो रही है, और एक सीमा तक सफल भी हो रही है। यदि आज निजी क्षेत्र के शिक्षा संस्थान न हों तो आज देश को वे प्रतिभाएँ न मिले जिनकी अपेक्षा है।

शिक्षा संस्थान विशेषकर स्नातक तथा स्नातकोत्तर शिक्षा संस्थान राजनीतिज्ञों द्वारा अपनी पार्टी के कार्यकर्ता तैयार करने वाले केन्द्र बन गये। विश्वविद्यालय और छात्र मालिक और मजदूर की श्रेणी में आ गये, जहाँ छात्र नित नई माँगें प्रस्तुत कर अध्ययन-अध्यापन में व्यवधान डालने लगे। इस कार्य में विश्वविद्यालय के अध्यापक और कर्मचारी भी पीछे नहीं रहे, निरन्तर वरिष्ठ पदों के सृजन की माँग तथा अधिकाधिक वेतन तथा सुविधा। अध्ययन तथा शोध इनका उद्देश्य नहीं रह गया।

हमने बड़े-बड़े उद्योग लगाये, किन्तु उनको नियंत्रित करने वाले मनुष्य नहीं बनाये। हाँ मानव संसाधन विकास मंत्रालय अवश्य बन गया। आज शिक्षा का उद्देश्य अर्थकरी मात्र न रहे उसे संवेदनाजन्य बनाने की भी अपेक्षा है, नहीं तो गुजरात भूकम्प, उड़ीसा तूफान तथा ऐसी अन्य आपदाओं में संवेदनाशून्य मनुष्य किस काम का।

जन-जन को शिक्षित बनायें, राष्ट्र का बोध करायें, उनमें राष्ट्रीयता की चेतना जागृत करें। देश के समस्त नागरिकों को एक राष्ट्र के नागरिक बनाएँ। साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता का ढोल पीटना बन्द करें, इन शब्दों को राजनीति से खारिज कर दें, तभी देश का विकास होगा।

ग्रहों से सम्बन्ध

ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह अपने नियमित मार्ग पर चलते हुए परिक्रमा पूर्ण करते हैं। पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमती हुई एक निर्धारित मार्ग पर चल रही है। आकाश में जो भी ग्रह हैं वे सभी अपने स्थान पर स्थित हैं। पृथ्वी जब अपनी मन्द गति से पश्चिम से पूर्व की ओर चलती है तब ऐसा प्रतीत होता है कि आकाश में सितारे चल रहे हैं। भगवान के इच्छानुसार पृथ्वी पर सप्तऋषि आए और सात ग्रहों के रूप में आकाश में स्थापित हुए। इसी प्रकार भक्त ध्रुव आए और तपस्या पूर्ण होने पर ध्रुव तारा बन गए। इससे यह प्रमाणित होता है कि मनुष्य आत्मा की खोज में परमात्मा तक पहुँच सकता है और वह स्वयं को ग्रह भी बना सकता है।

हैड़ाखान विश्वमहाधाम, गौतमी गंगा के तट पर स्थित, बहुत पवित्र और सिद्ध स्थान है। पूज्य बाबाजी महाराज, महावतार बाबाजी, साधारण संत का रूप धारण किये हुए हैड़ाखान में सिद्ध गुफा के सामने बैठे पाए गए थे। हैड़ाखान गाँव के लोग उनकी तरफ आकृष्ट हुए और धीरे-धीरे वह चारों ओर बाबा हैड़ाखान के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपनी दैविक शक्ति द्वारा सारे संस्कारी जीव, स्त्री-पुरुषों को, धीरे-धीरे दर्शन देकर उन्होंने अपने पास बुलाया और तीन-चार वर्ष के भीतर अपना दैविक तेजमय शरीर, जो महावतार बाबाजी का रूप था, प्रकट कर दिया।

उनकी कुटिया ऐसी बनाई गई है, जो गौतमी गंगा के ऊपर और निकट है। एक बड़ी खिड़की उत्तर की ओर है, जहाँ से श्री प्रभु पवित्र गुफा और सामने की पहाड़ी को देख सकते हैं। उस पहाड़ी से ऊपर कुछ दूर कूर्मांचल कैलाश नाम स्थान है। उस स्थान पर बहुत समय तक शंकर और पार्वती दोनों निवास करते थे। उसके बाद वे मानसरोवर चले गए, जिससे मनुष्य आसानी से उन तक न पहुँच सके। बहुत दिनों तक वहाँ निवास करने के बाद द्रोणगिरि पर आशुतोष रूप त्र्यंबक भगवान साम्ब सदाशिव महावतार बाबाजी के वेश में रहने लगे। उसी स्थान पर लाहिड़ी महाशय को क्रिया-योग की दीक्षा दी गई और द्रोणगिरि से ही पूज्य हनुमानजी लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी ले गए थे।

कूर्मांचल कैलाश के चारों ओर द्रोणगिरि के पास उस क्षेत्र की पहाड़ियों में, और हिमालय क्षेत्र की जगह-जगह गुफाओं, में सैकड़ों वर्षों से लोग तपस्या कर रहे हैं। उनकी स्थिति ऐसी हो गई है कि वे अपने इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर शरीर को ज्योति के रूप में बदल कर जा-आ सकते हैं। अपनी तपस्या के अनुसार उस रोशनी में एक प्रकार का रंग होता है। तपस्या करनेवाले पुरुष और स्त्रियाँ दोनों ही हैं।

श्री प्रभु आमतौर से अपनी कुटिया से चार बजे सुबह निकलते हैं और गौतमी गंगा में स्नान करने के लिए नीचे की ओर जाते हैं। वे न कुछ खाते हैं और न आमतौर पर बहुत कम सोते हैं। रात भर कुछ न कुछ दैविक कार्य होता रहता है। सन् 1975 में एक दिन भोर में 3 बजे मुझे कुछ झटका-सा लगा और एक आवाज-सी आई कि 'श्री प्रभु आपको बुला रहे हैं'। मैं उठा और उनकी कुटिया की ओर चल पड़ा। उनकी कुटिया तक पहुँचने के लिए एक दरवाजा और था। जब मैं वहाँ पहुँचा तब वह दरवाजा अन्दर से बन्द था। मैंने सोचा कि यदि श्री प्रभु ने मुझे बुलाया होता तो यह दरवाजा खुला होता। कुछ देर सोचने के बाद मैंने निर्णय किया कि जब मैं उठ ही गया हूँ तब स्नान कर लेता हूँ। अपने वस्त्र लेकर मै स्नान के लिए घाट पर था। उस समय मेरी नज़र सामने पहाड़ी पर पड़ी। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि पहाड़ी पीली और लाल रोशनी से जगमगा रही थी। यह तो मालूम ही था कि उस क्षेत्र में कोई भी गृह-स्थान नहीं है और इतनी ऊँची चोटी पर किसी के रहने का सवाल ही नहीं उठता। मैं स्नान कर उसी स्थान पर बैठ गया। थोड़ी ही देर में मैंने देखा कि पहाड़ी के पीछे से कुछ पीले और कुछ लाल रंग के सितारे आ रहे थे। मैंने देखा कि दूर पहाड़ी से उतरने के बाद वे सितारे लुप्त हो जाते थे।

थोड़ी देर तक देखने के बाद लगभग साढ़े-तीन बजे ऐसा दिखाई पड़ा कि बहुत से सितारे धीरे-धीरे उठे और पहाड़ी पार कर अदृश्य हो गए। बहुत से सितारे काफी ऊँचाई पर पहुँच कर उत्तर की ओर चले गए और अदृश्य हो गए। इस दृश्य ने मुझे बहुत ही चकित कर दिया। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं कुछ नायाब चीज प्राप्त कर रहा हूँ। मैं खामोश रहा और किसी से भी मैंने कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन फिर मैं करीब तीन बजे उठ गया। स्नान करने के लिए नीचे गया। स्नान करते समय कुछ दृश्य मैंने उसी प्रकार के देखे, लेकिन उस दिन मैं स्नान कर ऊपर आकर श्री प्रभु की कुटिया के निकट आकर बैठ गया और पहले दिन की तरह का ही दृश्य फिर देखता रहा। कभी-कभी ऐसा होता कि मैं उनको हाथ जोड़कर प्रणाम कर लेता, यह सोचकर कि न मालूम यह कौन हैं। सूक्ष्म शरीर के विषय में मुझे पता था, किन्तु दिव्य ज्योर्तिमय शरीर के विषय में मुझे मालूम नहीं था। कुछ लोग उस दिव्यमय ज्योतिस्वरूप को सूक्ष्म शरीर भी कहते हैं। मैं मन ही मन सोचता रहा कि क्या करूँ? फिर हिम्मत कर दूसरे दिन शाम चार बजे जब श्री प्रभु अपनी कुटिया से बाहर आए, उसके थोड़ी देर बाद मैंने उनसे प्रार्थना की कि मेरा मन कुछ परेशान है और कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ। अन्तर्यामी सब जानते थे। प्रसन्नचित्त होकर बोले, कहो-कहो क्या बात है? मैंने उनके दो-दिन का अनुभव बताया और पूछा कि प्रभु यह उड़ते हुए सितारे क्या हैं? श्री प्रभु ने संक्षेप में कहा—''बेटा, इस क्षेत्र में और पूरे हिमालय में बहुत से सन्त-महात्मा सैकड़ों वर्षों से तपस्या कर रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति आ गई है कि दैविक शक्ति का आह्वान कर स्वयं को वह ज्योति या सितारे के रूप में बदल लेते हैं और अपने इच्छानुसार भ्रमण करते हैं।''

मैं सोचता रहा और पुनः प्रश्न किया—''प्रभु मेरे प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं मिला।''

प्रभु ने कहा क्यों?

तब मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि वे सब आते हैं गौतमी गंगा की ओर, अदृश्य हो जाते हैं और फिर उड़ने लगते हैं, तो यहाँ क्यों आते हैं?

श्री प्रभु मुस्कुराए और बोले, तूने अत्यन्त गूढ़ बात पूछ ली है। ये सभी दिव्यात्माएँ हैं जो आती हैं और गौतमी गंगा में स्नान करती हैं, अदृश्य रहते हुए मुझसे बात कर और मेरे आदेशानुसार चली जाती हैं। तुमने देख लिया, समझ लिया और ऐसा लगता है कि अब सभी सितारों से तुम्हारी दोस्ती हो गई है।

उनके इन वाक्यों को सुनकर मैं चकित रह गया और कोई प्रश्न नहीं किया। उसी दिन शाम से मेरे मन में उनके इन आशीर्वादात्मक शब्दों का—''ऐसा लगता है कि उन सितारों से तुम्हारी दोस्ती हो गई है'' मंथन होने लगा। दूसरे दिन मैं देर से चार बजे उठा। स्नान के बाद श्री प्रभु से चन्दन प्राप्त किया, जप और क्रिया करने लगा। दिन में दस बजे के बाद श्री प्रभु से आज्ञा लेकर अपने निवास स्थान प्रयाग के लिए चल पड़ा।

कई दिन बाद मैं अपने लॉन में बैठा हुआ था और आकाश की ओर मैंने देखा। सितारे चमक रहे हैं। वातावरण शान्त था। अचानक श्री प्रभु के वाक्य दिमाग में आ गए—''सितारों से दोस्ती.....।'' मन में कुछ इच्छा हुई और मैं सितारों को एक के बाद एक देखता रहा और सबसे पूछता रहा कि क्या तुम मेरे मित्र हो। कुछ ही समय के बाद एक सितारे पर मेरी दृष्टि रुक गई। मन ही मन मैंने पूछा—भाई चलो, जरा हम भी देखें। थोड़ी ही देर में उस सितारे में कुछ हरकत आ गई। मैंने उसको इशारा किया कि उत्तर की ओर चलो। वह सितारा धीरे-धीरे उत्तर की ओर चला। थोड़ी देर बाद मैंने सोचा कि मेरे मित्र ने तो मेरी बात मान ली, अब मैं इसको कष्ट क्यों दूँ। मैंने बाबाजी महाराज का ध्यान कर उनको प्रणाम किया और आकाश में अपने मित्र को प्रणाम किया और कहा, अब अपने स्थान पर चलो। देखते-देखते वह सितारा और सितारों के मध्य में पहुँच गया।

इसके विषय में जब मैंने अपने परिवार के

लोगों से बातें कीं तब मेरी पत्नी और मेरे बच्चे हँसने लगे। मेरी लड़की ने तो यहाँ तक कहा कि अपनी उँगली को कनपटी के पास घुमा कर बोली, 'डैडी, कुछ गड़बड़ है क्या?' मैं सिर्फ हँस दिया और उन लोगों के हँसी-मजाक का आनन्द लेता रहा।

दो साल बाद श्री प्रभु के एक भक्त का परिवार किसी कार्यवश मेरे घर आया। बातचीत होने के बाद मैं उन लोगों को विदा करने के लिए बाहर निकला। उनमें से एक ने कहा—श्रीवास्तव साहब, कुमकुम मेरी बेटी से कह रही थी कि शायद सितारे आपके मित्र हो गए हैं, जरा उस मित्रता का प्रमाण हमको भी दीजिए, मैं भी इसका आनन्द लेना चाहती हूँ। इस पर सब लोग हँस पड़े। मेरे मन में आया कि यह कठिन परीक्षा का समय है क्या? मुझे सन् 1976 में शेषनाग-दर्शन की परीक्षा देने के विषय में ध्यान आ गया। मैंने उन लोगों को जवाब दिया कि यह सब तो बाबा की कृपा और आज्ञा पर ही निर्भर होता है। अच्छा, मैं कोशिश करता हूँ और मैं आकाश की ओर देखने लगा। श्री प्रभु का ध्यान किया और एक सितारे से बोला, भाई, मेरी लाज रखो और चलकर दिखा दो। कुछ ही क्षणों में उस सितारे में हरकत आ गई। मैंने उनको इशारा किया कि उन चार सितारों के बीच में जो एक सितारा है वह चलनेवाला है। मैं कह ही रहा था कि वह सितारा उत्तर या पश्चिम की ओर चलने लगा। कुछ दूर चलने के बाद मैं बोला, देखिए, अब वह अपने स्थान पर वापस जाएँगे और वह सितारा अपने स्थान पर वापस पहुँच गए। मैंने उसको प्रणाम किया और श्री प्रभु को धन्यवाद दिया। इस स्थिति का आनन्द मैंने जीवन में कई बार लिया।

पाठकगण शायद यह सोचेंगे कि आकाश में अब सैकड़ों सैटेलाइट चल रहे हैं, परन्तु 1977 में तो ऐसा नहीं था। दूसरी बात, कोई भी सैटेलाइट को इस तरह से चलाया नहीं जा सकता। वह अपने स्थान पर प्रार्थनानुसार वापस भी नहीं जा सकता। यह समझ लेना चाहिए कि प्रभु के आशीर्वाद में कितनी शक्ति है, उनके इच्छानुसार अनहोनी भी होनी हो सकती है।

—विंग कमाण्डर सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव

पुस्तक : *शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान से*

सम्मान-पुरस्कार

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने हिन्दी सेवी सम्मान पुरस्कारों की राशि 31 हजार रुपये से बढ़ाकर अब एक लाख रुपये कर दी है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष हिन्दी व अहिन्दी भाषाविदों को राष्ट्रपति भवन से दिया जाता है।

मनोज दास को सरस्वती सम्मान

सुप्रसिद्ध उड़िया साहित्याकार **मनोजदास** को उनके उपन्यास 'अमृत फल' के लिए सन् 2000 के सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया है। सरस्वती सम्मान देने वाले के०के० बिड़ला फाउण्डेशन की ओर से पुरस्कार के रूप में उनहें पाँच लाख की नकद राशि दी जाएगी।

सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया उपन्यास 'अमृत फल' 1996 में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद पिछले वर्ष सन् 2000 उनका उपन्यास 'तंद्रलोकारा प्रहरी' भी आ चुका है। सत्य, प्रकाश, ज्ञान और अमरत्व की अपनी चिरतलाश में आज का मनुष्य अपने पूर्वजों से किस प्रकार अलग है, उपन्यास 'अमृत फल' इसी प्रश्न पर आधारित है और एक तरह से इस प्रश्न का उत्तर तलाशना ही इसकी विषयवस्तु है।

विक्रम सेठ ब्रिटेन के शीर्ष पुरस्कार से सम्मानित

'ए सूटेबल बॉय' के लेखक भारतीय मूल के **विक्रम सेठ** को लेखन क्षेत्र में उनके योगदान के लिये ब्रिटेन के शीर्ष पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

'कमांडर आफ द आर्डर आफ द ब्रिटिश इंपायर' पुरस्कार संस्कृति मंत्री क्रिस स्मिथ ने सेठ को यह पुरस्कार दिया। स्मिथ ने इस अवसर पर कहा कि उनके देश में सेठ के काम की काफी प्रशंसा हुई है।

'अनीस विला' लेखकों के लिए

भारतीय मूल के अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक सलमान रुश्दी की सोलन स्थित पैतृक सम्पत्ति 'अनीस-विला' शीघ्र ही लेखक गृह के रूप में साहित्यकारों और लेखकों के लिए खोल दी जाएगी। यह अपने प्रकार का देश में पहला लेखक-गृह होगा, जिसे सरकारी या संस्थागत प्रश्रय के आधार पर नहीं चलाया जाएगा।

सलमान रुश्दी ने सोलन में इसे 'लेखक गृह' में शीघ्रातिशीघ्र तब्दील करने की हिदायत दी थी और उनके अटॉर्नी एस०टी० शंकरदास ने उनकी हिदायतों को अमल में लाते हुए अनीस विला को 'लेखक गृह' के रूप में विकसित करने का काम शुरू कर दिया। यह लेखक गृह मार्च तक चालू कर दिया जाएगा।

इसमें एक समय में पाँच-छह साहित्यकार/लेखक ठहर सकते हैं। यहाँ टेलीफोन के साथ-साथ रसोई की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। शीघ्र ही इस भवन में इंटरनेट का प्रावधान भी किया जाएगा। अटॉर्नी शंकरदास के अनुसार इस लेखक गृह को चलाने के लिए न तो सरकारी आर्थिक सहायता की आवश्यकता है और न ही ऐसी सहायता लेने के लिए भविष्य में कोई योजना है। पहाड़ी पर्यावरण में स्थित अनीस विला अध्ययन, अनुसंधान और रचनात्मक लेखन में रत साहित्यकारों व लेखकों को अनुकूल वातावरण उपलब्ध करवाएगी।

हिन्दी-पत्रिकाएँ

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास रहा है कि निकलती हैं और बन्द हो जाती हैं। कितनी प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ बन्द हो गईं किन्तु उनका स्थान लेने के लिए अनेक नई पत्रिकाएँ आये दिन निकलती हैं। कुछ पत्रिकाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती हैं जिनमें अनेक रचनाकारों की मौलिक रचनाएँ प्रकाशित होती हैं जो समकालीन साहित्य के विकसनशील स्वरूप और विधाओं को प्रमाणित करती हैं। हिन्दी साहित्य के अध्येताओं को इन पत्रिकाओं में अक्सर विशिष्ट सामग्री मिलती है। अल्प साधनों से अनेक उत्साही युवक, साहित्यकार अपनी वैचारिक सृजनशीलता तथा दृढ़ इच्छाशक्ति से इन पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। साहित्य में जीवन्तता रचनाकार की ऊर्जा बनाये रखने के लिए विचारों की बहस बेहद जरूरी है। यही साहित्यिक पत्रिका की जान है। इनके स्वागत की अपेक्षा है।

प्रकाशित पत्रिकाएँ

उद्भावना
सम्पादक : अजेय कुमार
सम्पर्क, एच० 55, सेक्टर 23, राजनगर
गाजियाबाद-211 004 (वार्षिक 50.00)

तनाव
सम्पादक : वंशी माहेश्वरी
सम्पर्क, 57 मंगलवास, पिथरिया (10.00)

समय माजरा (मासिक)
सम्पादक : हेतु भारद्वाज
सम्पर्क, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, आगरा रोड, जयपुर-70 (वार्षिक 100.00)

अभिनव कदम
सम्पादक : चन्द्रदेव राय
सम्पर्क, 223 प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड मऊनाथभंजन, मऊ

निष्कर्ष
सम्पादक : गिरीशचंद्र श्रीवास्तव
सम्पर्क, 59 खैराबाद, सुल्तानपुर (15.00)

सरयूधारा
सम्पादक : वीरेन्द्र त्रिपाठी
सम्पर्क, हिन्दी भवन, विश्वेभारती
शान्ति निकेतन-731 235
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 75.00)

नया मानदण्ड (त्रैमासिक)
सम्पादक : कुसुम चतुर्वेदी
सम्पर्क, शुक्ल साहित्य शोध संस्थान
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी (वार्षिक 160.00)

विमर्श
सम्पादक : सुभाषचन्द्र गांगुली
सम्पर्क, 408 ए/15 जी०, बक्शी खुर्द
दारागंज, इलाहाबाद (20.00)

माध्यम
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन
इलाहाबाद

सांसदों के लिए मार्गदर्शक ग्रन्थ

संसद और मीडिया के सरोकार

प्रदीप तिवारी

लोकतंत्र में संसद और प्रेस—दोनों का अपना विशेष स्थान रहा है। देश में संसदीय राजनीति की शुरुआत के समय से ही पत्रकारिता ने उसकी गतिविधियों और कार्यप्रणालियों से अपने सरोकार जोड़े और उसका निर्वाह भी करती आ रही है। संसदीय संस्थाएँ—लोकसभा, राज्यसभा, विधान-सभा आदि पत्रकारिता के लिए रिपोर्टिंग की स्थलियाँ रही हैं, मगर इनके भीतर की गतिविधियों में निरन्तर आ रहे अवस्थागत बदलाव के चलते और इनकी कार्यवाहियों में मौजूद तकनीकी प्रधानता के चलते पत्रकारिता के सामने इनसे अपने सरोकार तय करने की और उन्हें पुन: निर्धारित करने की जरूरतें बनी रहती हैं। इन्हीं बातों का ख्याल कर वरिष्ठ पत्रकार ललितेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव ने 'संसद और संवाददाता' शीर्षक पुस्तक लिखी है, जिसे वाराणसी के विश्वविद्यालय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। अपनी इस कृति में लेखक ने सांसदों और संवाददाताओं दोनों के प्रशिक्षण और जानकारी योग्य बातों का समावेश किया है।

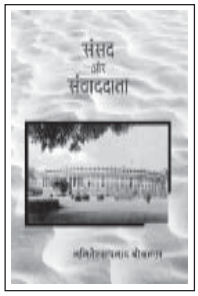

इस पुस्तक में कुल 13 अध्याय हैं जिनमें संसद, उसकी कार्यप्रणाली, असंसदीय स्थिति, रिपोर्टिंग, विधायी कार्य, बजट, संसदीय व्यवहार के नियम, प्रश्न व विशेषाधिकार आदि की सटीक और सूचनासम्पन्न चर्चाएँ हैं। पुस्तक के दूसरे हिस्से में परिशिष्ट दिया गया है जिसमें संसदीय शब्दावली, प्रस्ताव, समितियाँ, भित्ति लेख आदि के साथ-साथ शासन के सर्वोच्च पदासीनों और चुनाव आदि की भी विस्तृत चर्चा है। लेखक ने इसे एक अत्यन्त सूचनात्मक और जरूरी पुस्तक के रूप में तैयार किया है। इसे तैयार करने में ललितेश्वरजी ने लोकसभा के प्रकाशनों की भी काफी मदद ली है, संसद की रिपोर्टिंग एक विशेषज्ञ कार्य है। संवाददाता को प्रत्येक क्षण सचेत रहना होता है और नियमावलियों पर भी नजर रखनी होती है। संसदीय नियमों से जुड़ी शर्तों का पालन करना संवाददाताओं के लिए भी जरूरी होता है। भूल-चूक से तकनीकी कठिनाई उत्पन्न हो सकती है। इस पुस्तक के माध्यम से इन सभी स्थितियों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। कोई पत्रकार जब लोकतंत्र की शासकीय प्रतिनिधि इन संस्थाओं के लिए रिपोर्टिंग करने जाता है तो उसे इन सभी स्थितियों की जानकारी पूर्व में ही होनी चाहिए। स्वयं संसद के दोनों सदन अपनी दैनिक कार्रवाई की रिपोर्ट तैयार करते हैं ताकि सभाध्यक्ष और सदस्य आवश्यकता पड़ने पर सही तथ्यों की जाँच कर सकें। संविधान सभा से लेकर आज तक की सम्पूर्ण रिपोर्ट संसद के पुस्तकालय में सुरक्षित है। आरम्भिक तैयारी के लिए रिपोर्टर को उक्त साक्ष्यों से सहयोग मिल सकता है।

इस पुस्तक में असंसदीय स्थितियों का भी वर्णन किया गया है। यह भी बताया गया है कि ऐसी स्थितियाँ किस तरह जोखिम का कारण बनती हैं और एक पत्रकार के लिए इसमें अपने कर्त्तव्य निर्वाह को कैसे सम्पन्न करना चाहिए। गलत रिपोर्टिंग मानहानि का कारण बनती है, इसलिए उससे बचने के उपायों की ओर भी इशारा किया गया है। बार-बार होने वाले संविधान संशोधनों के चलते किस तरह की विधायी परिस्थितियाँ उत्पन्न रही हैं इस बात की ओर भी इस पुस्तक में ध्यान आकृष्ट किया गया है। साथ ही यह बताया गया है कि संसद जन आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब है। जनता की आशाओं, विश्वासों और समस्याओं के समाधान की जगह भी वही है। संविधान निर्माताओं ने संसद का संचालन और उसकी कार्यवाही संसदीय प्रणाली, नियमों, प्रक्रियाओं और परम्पराओं के आधार पर किए जाने की व्यवस्था की थी। संसद को बहस, विचार एवं मतदान के आधार पर चलना चाहिए। मगर कभी संसद व विधानसभाओं में हम देखते हैं कि संघर्ष, हाथापायी, तोड़फोड़, कागजों की छीना-झपटी की नौबत भी आ जाती है। अखबारों के प्रथम पृष्ठ के लायक यह खबरें बन जाती हैं मगर इससे जिस गरिमामय परम्परा की क्षति होती है, उसके बारे में संसद में सक्रियता निभाने वाले लोगों को जितनी चिन्ता करनी चाहिए उतनी ही चिन्ता पत्रकार भी करें तो बहुत अच्छा हो, इधर भी लेखक ने इशारा किया है। लेखक ने यह भी बताया है कि इसी कारण संसद में होने वाली कार्रवाइयों के सभी पक्षों की आज रिपोर्टिंग नहीं हो पाती। अखबारों की इस उपेक्षा स्थिति से आम संसद सदस्यों में नाराजगी भी रहती है। कारण यह कि वे अपने मतदाताओं को अपनी स्थितियों से अवगत नहीं करा पाते हैं। उल्टे हंगामा और संसदीय गरिमा के प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण सांसदों की छवि भी नष्ट हो रही है। इन स्थितियों को देखते हुए किस तरह मीडिया अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करे और संसदीय प्रणाली में अपनी भूमिका निभाने वाले लोग अपने अन्य सरोकारों के साथ मीडिया से भी जुड़े रह सकें, इन बातों की ओर भी इस पुस्तक में ध्यान दिलाया गया है। हालाँकि संसद से जुड़ी रिपोर्टिंग ज्यादातर अब आम पाठक की रुचि का हिस्सा नहीं है और उसकी उपयोगिता को लेकर प्रिंट मीडिया में आए दिन नई बहसें जन्म ले रही हैं। ऐसी स्थितियाँ होने के बावजूद यह एक सच्चाई है कि उससे जुड़ी सूचनाओं का सामान्य जन में संप्रेषण एक विशिष्ट आवश्यकता है। संसद और लोकतंत्र की व्यवहारिक दुनिया और तकनीकी लक्षणों पर यह पुस्तक एक साथ दृष्टि डालती है। **पत्रकारों, सांसदों, जनप्रतिनिधियों और आम पाठकों के लिए यह एक जरूरी किताब है।**

—'राष्ट्रीय सहारा' से

आगामी प्रकाशन

महाभारत का काल निर्णय

(ज्योतिर्वैज्ञानिक ऐतिहासिक तथा पौराणिक साहित्य के आधार पर)

डॉ० मोहन गुप्त

महाभारत भारत का प्राचीन इतिहास है, इसे इतिहासकारों तथा विद्वानों ने स्वीकार किया है क्योंकि महाभारत की घटना आधुनिक संदर्भों से मेल खाती है और भारत के हजारों वर्ष के इतिहास के परिप्रेक्ष्य में उसे बहुत पुरानी नहीं माना जा सकता।

इस देश की एक दीर्घ अविच्छिन्न परम्परा है जिसमें प्रत्येक घटना के कालक्रम, तिथि, नक्षत्र आज तक दिए हुए हैं। पुरातत्त्वशास्त्र, मुद्राशास्त्र, पुराण, पुरा लेख आदि अनेक ऐसे प्रमाण उपलब्ध हो गए हैं जिससे महाभारत की ऐतिहासिकता पश्चिमी ऐतिहासिक दृष्टि से भी लगभग पूरी तरह प्रमाणित है।

महाभारत की ऐतिहासिकता प्रमाणित होने पर इसके काल निर्धारण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस संदर्भ में भारतीय ज्योतिष की परम्परा पूरी तरह सहायक है।

विद्वान् शोधकर्ता डॉ० मोहन गुप्त का मानना है काल क्रम के निर्धारण का मेरुस्तम्भ युग व्यवस्था तथा इसका ठोस आधार आकाश में नक्षत्रों की स्थितियाँ हैं जो समय-समय पर घटनाओं के संदर्भ में उल्लेखनीय है।

यह ग्रन्थ भारतीय ज्योतिष की वैज्ञानिकता को सिद्ध करते हुए महाभारत की प्रामाणिकता स्थापित करती है। ज्योतिष के विभिन्न ग्रन्थों, इतिहासकारों की मान्यताओं तथा पौराणिक साक्ष्यों के सन्दर्भ में लेखक ने महाभारत का काल निर्णय प्रस्तुत किया है।

भारतीय भाषाओं के अनेक साहित्यकार आज महाभारत के कथानक तथा पात्रों को आधुनिक जीवन के संदर्भ में व्याख्यायित करने का प्रयास कर रहे हैं। कृष्ण, कर्ण, अर्जुन, कुन्ती, द्रौपदी, गांधारी सभी जीवन्त पात्र प्रतीत होते हैं, इसीलिए कि वे भारत के जीवन्त इतिहास हैं।

''महाभारत युद्ध के काल-निर्णय को लेकर विद्वानों के बीच जो युद्ध हो रहा है, वह महाभारत से भी अधिक भयंकर प्रतीत होता है। किन्तु इस युद्ध को जीते बिना हम प्राचीन भारतीय काल गणना के दुर्ग को प्राप्त नहीं कर पायेंगे इसलिए इस युद्ध को जीतने के लिए भरपूर प्रयत्न करना चाहिए।'' –डॉ० दफ्तरी

मुट्ठी में बन्द तूफान

लेखिका : **अनिन्दिता**

पन्चानबे रुपये

'मुट्ठी में बन्द तूफान' अनिन्दिता की प्रेमरस से पूर्ण ग्यारह कहानियों का संकलन है जो अपने अभिजात्य गुणों के कारण बंगला लेखक की याद कराता है।

'आनन्द गीत' प्रौढ़ आयु के कलाकार की प्रेम कहानी है। लेखिका के शब्दों में यदि इच्छाओं के रंगों को किसी के मन के कैनवास पर फैलने का अवसर न मिला तो वे अव्यक्त ही रह जाएंगे लेकिन व्यक्त हो जाने पर वह प्रेम आनन्द हो जाता है। सधी हुई शैली में लिखी यह कहानी अत्यन्त सफल है।

विदेश में बसा भारतीय प्राय: वहाँ के रंग में ऐसा रंग जाता है कि अपने देश को भूल जाता है लेकिन विदेश में पैदा हुई तथा पली एक भारतीय महिला जब भारत से आयी और विदेश में बसी एक महिला मित्र से कहती है कि अपने देश में हम चाहे जो कर लें पर विदेश में हम अपने देश के प्रतिनिधि होते हैं तो उसका विदेशी रंग उतर जाता है। यह 'अपना नाम' शीर्षक कहानी की कथावस्तु है।

'निमन्त्रण पत्र' कसी हुई शैली में लिखी एक प्रभावशाली कहानी है जिसमें स्त्री की शक करने की प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया गया है। अन्त तक कहानी में सस्पेन्स बना रहता है।

'गुलाबी परियाँ' दिवास्वप्न देखने वाले युवकों की कहानी है। लेखिका के ही शब्दों में— हृदय की गहराई में बसने वाली तरुणाई ही परी है, निरन्तर मन जहाँ अपना निवास बना कर रहता हो वही मेनका है—

आँखों के रास्ते मन में उतर कर प्रतीक्षा और आतुरता उत्पन्न करने वाली यह रागात्मक प्रवृत्ति है—हमारी गुलाबी परी, मेरे पुत्र की गुलाबी परी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी नवीन रूप भंगिमाओं वाली युवा मन की गुलाबी परी।

'स्वाति' संकेतों के माध्यम से कही गयी प्रेम कहानी है। प्रारम्भिक जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के कितने ही अवसर गँवा चुकी स्वाति अपनी भावनाओं को मौन की भाषा में व्यक्त करती है किन्तु जब वह देखती है कि विवाह जैसे व्यक्तिगत मामले में हस्तक्षेप होता है तो वह उसका विरोध करने का संकल्प लेती है।

हर कोई स्वयं निर्मित कवच में रहता है, अपने सुख तथा अपने दु:ख को बढ़ा-चढ़ा कर सोचता है। लेकिन जब वह हँसी दु:ख को दूसरों के दु:ख में ढाल ले तो वह बड़ा नहीं रहता छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जाता है। लेकिन यह तभी सम्भव हो पाता है जब वह अपने कवच घेरे से बाहर आता है। 'घेरे से बाहर' का यही निचोड़ है।

संयुक्त परिवार की संयुक्त जिम्मेदारी का बोझ उठाने वाली लता अपनी छोटी-छोटी जरुरतें पूरी नहीं कर पाती और नयी चप्पल खरीदने का कार्यक्रम स्थगित करती रहती है। एकदिन जब वह बारिश के मौसम में आती है तो उसकी पुरानी चप्पल जवाब दे देती है। उसे रिक्शा में आना पड़ता है। पहले तो भाड़ा तय करने में किचकिच होती है और डेढ़ रुपये पर बात तय होती है। घर पहुँच कर वह उसे गलती से अठन्नी की जगह पाँच का सिक्का दे देती है। रिक्शावाला उससे कुछ कहना चाहता है लेकिन वह सोचती है कि वह अधिक किराये के लिए हुज्जत करना चाहता है असलियत जानने पर वह पानी-पानी हो जाती है। साधारण-सा अन्त होते हुए भी अपने सौष्ठव के कारण कहानी प्रभावशाली बन जाती है।

'सिन्दूर दान' में धार्मिक एवं जातीय बन्धनों से परे युवा सम्बन्धों का चित्रण है।

सौन्दर्य को सबने अलग-अलग ढंग से देखा है लेकिन वास्तविक सौन्दर्य क्या है? पत्रात्मक शैली में लिखी यह कहानी सौन्दर्य के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालती है। क्या देह का सौन्दर्य ही सब कुछ है? क्या इसके परे और कुछ नहीं होता? क्या स्त्री का मूल्य और महत्व मात्र उसके सौन्दर्य से ही आंका जा सकता है? 'उत्तर देना सौदामिनी' में इन्हीं प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है।

'टपकती पीली बूँदें' वैज्ञानिक फंटेसी है जिसका नायक मृत्युंजय एक सफल वैज्ञानिक है और मनुष्य का कैनन बनाने में सफल हो जाता है। उसकी सफलता में केवल एक ही कमी रह जाती है कि जब वह किसी शरीर में कैनोन का प्रवेश कराना चाहता है तो उसका शरीर हवा का बन जाता है ठोस नहीं रह जाता। अन्त में उसके बारह वर्ष के परिश्रम को कोई अन्य ग्रह वाला चुरा ले जाता है।

'सलोनी पागल है' एक गरीब परिवार की युवा लड़की की कहानी है जिसे उसके माता-पिता मासिक वेतन के लालच में विदेशी दम्पति के साथ विदेश भेज देते हैं, बस उसकी त्रासदी शुरू हो जाती है। मालिक ही उसका यौन शोषण करता है। किसी तरह वह वहाँ से भाग खड़ी होती है। विभिन्न स्वयंसेवी महिला संगठन उसे न्याय दिलाने का प्रयत्न करते हैं लेकिन न्याय है जो उससे दूर भागता जाता है। लेकिख भी ऐसे संगठनों से सन्तुष्ट नहीं दीखती। सलोनी को मुआवजे के रूप में क्या मिले इन सब पर चर्चा के लिए दो हफ्ते में पाँच बार पाँच सितारा होटल में महिला संगठनों की बैठक भी सम्पन्न हो चुकी।

लगता है वर्तमान समय में नारी मुक्ति संगठन जैसी संस्थायें भी व्यवस्था का अंग बन गयी हैं।

अनिन्दिता की प्राय: सभी कहानियाँ भावप्रवण एवं रचना सौष्ठव से पूर्ण हैं। प्रत्येक कहानी किसी मौलिक बात की ओर इंगित करती हैं लेकिन कहानी का निर्वाह इतने कलात्मक ढंग से हुआ है कि वह समस्या के बोझ से दबी नहीं मालूम होती। यही इन कहानियों की विशेषता है।

—ना०वि० सप्रे

एक शब्द उठाता हूँ

अनन्त मिश्र

एक सौ अस्सी रुपये

अनन्त मिश्र का कविता संग्रह बहुत विलम्ब से पाठकों के पास पहुँच रहा है। इसका मुख्य कारण यही है कि वे छपास रोग और इतिहास-प्रवेश की लालसा से मुक्त एक शुद्ध कवि हैं जो कविता लिख कर ही मुक्त तो हो जाते हैं और तृप्त। उनकी कविता से कोई कौन सा हित-साधन कर लेगा या उन्हें कवियों के किस खाने में डाल देगा, इसकी चिन्ता उन्हें नहीं। समुद्र मन्थन के इस भयानक देव-दानव संघर्ष में वे जिन्दगी की लय के साथ हैं। थके हारे बूढ़े काका के लिए एक चारपाई की तरह, बछड़े के लिए गाय के कच्चे दूध की तरह। जो जीवन-धारा में बहना चाहते हैं उनके लिए अनन्त मिश्र के पास हमेशा हैं कविताएँ। कविताएँ जिनमें सायास बुनावट नहीं, चालाकियाँ नहीं, छद्म नहीं। जो सहज संवेदना और कवि की उपस्थिति से भरी पूरी है। कवि जो पक्षियों को छंद की तरह तृप्त भाव से देख सकता है और जेब में मूँगफली भरे, चिड़ियों से बातें करते भीड़ में गुजर सकता है। अनन्तरूपात्मक जगत के साथ कवि का सहज लगाव उसे मानव के साथ मानवेतर प्राणियों तक ले जाता है—नाग-नागिन, पात-पुरइन, बाघ-बाघिन, कुत्ते, गदहे, अमरूद के तोते और गिलहरियों तक। सायकिल और बेंच जैसे प्राणहीन पदार्थों की भी चिन्ता है कवि को। उसे विश्वास है कि यह दुनिया रहेगी इसलिए वह आदमी को बार-बार उसके बीज होने की याद दिलाना चाहता है। अपने समय की चालू, दो दुना चार वाली कविताओं से अलग मस्ती में, पस्ती में, राग और विराग में लिखी गई अनन्त मिश्र की ये विरल कविताएँ कविता को किसी परिभाषा में बाँधने के जड़ प्रयास का प्रतिकार करती हैं।

—विश्वनाथप्रसाद तिवारी

पत्र, पत्रकार सरकार

काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर

एक सौ बीस रुपये

भारत के संविधान में प्रेस की स्वतंत्रता का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है। वह साधारण नागरिक के विचारों की अभिव्यक्ति के मूलभूत अधिकारों का ही एक भाग है। इस कारण संविधान द्वारा निर्मित कार्यपालिका, विधायिका या न्यायपालिका से जब पत्र और पत्रकार का संघर्ष होता है तो पलड़ा उनका ही भारी रहता है, प्रेस का नहीं। सरकार के ये तीनों अंग यह स्वीकार करते हैं कि लोकतंत्र के लिए स्वतंत्र प्रेस जरूरी है पर वे प्रेस के अधिकारों की व्याख्या नहीं करते। लेखक का कहना है कि अधिकारों की व्याख्या करने से उनको डर है कि इससे उनके अपने अधिकार कम हो जाएँगे। इस कारण वे प्रेस की स्वतंत्रता, सिद्धान्त रूप में स्वीकार करते हैं, पर उसे कार्य रूप में परिणत नहीं करते। इसी मुद्दे को उजागर करने के लिए और सरकारी तंत्र के तीनों अंगों की इस हिचकिचाहट को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने यह पुस्तक लिखी है। अब हालत यह है कि मंत्री, नेता, न्यायाधीश, मठाधीश, कुलपति और पूँजीपति ही नहीं हर कोई प्रेस को भाषण देने लगता है कि उसे क्या करना चाहिए।

किसी को भी अपनी नहीं प्रेस की आचार संहिता की चिन्ता रहती है। हर कोई प्रेस के माध्यम से प्रचार तो पाना चाहता है पर उसे अधिकारों से समृद्ध करने के बजाय प्रेस पर ही दोषारोपण करने लगता है। क्या प्रेस की स्वतंत्रता का अर्थ उद्योगपति की स्वतंत्रता है। लेखक ने पत्रकार और सरकार के सम्बन्धों के अलावा संवैधानिक पहलू, कानूनी पक्ष, विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका, आत्म-नियंत्रण और जानकारी प्राप्त करने के अधिकार पर गहन विचार किया है। प्रेस और सरकार के सम्बन्धों को समझने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है।

—नवभारत टाइम्स

वाग्दोह

वाग्दोह प्रो० कल्याणमल लोढ़ा की एक मूल्यवान कृति है। इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर लेखक के व्यापक अध्ययन और सरधावृति की छाप है। विशेषकर, इस ग्रन्थ का 'काल' शीर्षक लेख आधुनिक हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।

—डॉ० कुमार विमल, पटना

❑ ❑ ❑

प्रो० लोढ़ा ग्रन्थ में बहुत संग्रहणीय ज्ञान सामग्री संचित की है। प्रो० लोढ़ा ने, विशेषकर प्राचीन भारत के आदर्शों—संस्कृत, भाषा, राष्ट्रीयता आदि पर। वरेण्य ग्रन्थों के मन्थन से उद्धरणों सहित उनका यह लेखन अवश्य ही विद्वज्जनों में सामदृत होगा।

—देवर्षि कलानाथ शास्त्री

भूतपूर्व निदेशक,
भाषा एवं संस्कृत शिक्षा
राजस्थान सरकार, जयपुर
अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

विज्ञान कथा

डॉ० एस०एन० घोष

अस्सी रुपये

आधुनिक विज्ञान एक नये दर्शन का जन्मदाता है। इसने समाज, धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र सभी को प्रभावित किया है। एक ओर मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास किया गया है तो दूसरी ओर विनाश का माध्यम भी बना है। निर्माण और संहार विज्ञान के दो रूप हैं। विज्ञान विनाश के साधन निर्मित करता है, दूसरी ओर उससे बचने का उपाय भी बताता है। विभिन्न क्षेत्रों में किये गये ऐसे वैज्ञानिक प्रयोगों और आविष्कारों की कहानी विज्ञान-कथा का मुख्य विषय है। पुस्तक में देश-विदेश के प्रमुख वैज्ञानिकों और उनके कार्यों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

सामान्य पाठकों तथा विज्ञान के अध्येताओं सभी के लिए सरल, सुबोध शैली में लिखी गई पुस्तक अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक है।

डबराल समेत बाइस लोग साहित्य अकादमी से सम्मानित

हिन्दी के चर्चित कवि **मंगलेश डबराल,** पंजाब के साहित्यकार **वरियाम सिंह संधू** और उर्दू के लेखक **अम्बर बहराइची** समेत 22 लेखकों को 20 फरवरी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अकादमी के अध्यक्ष एवं उड़िया के मशहूर लेखक रमाकांत रथ ने एक गरिमापूर्ण समारोह में इन लेखकों को सन् 2000 के अकादमी पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार में पच्चीस हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र और एक प्रतीक चिन्ह शामिल है। श्री रथ ने दो लेखकों को मरणोपरांत पुरस्कार प्रदान किया। ये लेखक हैं डोगरी के बंधु शर्मा और कन्नड़ के शांतिनाथ के देसाई।

पुरस्कार प्राप्त अन्य लेखकों में सर्वश्री रमानंद रेणू, (मैथिली), एस० श्रीनिवास शर्मा (संस्कृति), जय गोस्वामी (बांगला), किरण नगरकर (अंग्रेजी), हरेकृष्ण कौल (कश्मीरी), प्रतिमा राय (उडिया), रामलाल अधिकारी (नेपाली), एन गोपी (तेलुगु), जयप्रकाश पंडया (ज्योतिपुंज), राजस्थानी, अकादमी पुरस्कार (मलयालम), बीनेस अन्ताड़ी (गुजराती), अपूर्व शर्मा (असमिया), परम अबीचंदाजी (सिंधी), शिवशंकरन (तमिल), पांडुरंग राजाराम शणै मांगी (कोंकणी) और ना०धो० महानोर (मराठी) शामिल है। समारोह के अन्त में सुप्रसिद्ध नृत्यांगना एवं पंडित बिरजू महाराज की शिष्या वास्वती मिश्र ने हिन्दी के जाने-माने लेखक एवं पत्रकार स्व० धर्मवीर भारती की चर्चित कृति (कनुप्रिया) पर कथक नृत्य प्रस्तुत किया। समारोह में अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि के०की०एन० दारूवाला ने मुख्य अतिथि के रूप में भाषण दिया। धन्यवाद ज्ञापन अकादमी के उपाध्यक्ष एवं उर्दू के मशहूर आलोक गोपीचंद नारंग ने दिया।

शिवस्वरूप बाबा हैड़ा खान

सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव

एक सौ पचास रुपये

अध्यात्म-क्षेत्र में दिव्य विभूतियों के दर्शन और आशीर्वाद का विशेष महत्त्व है। हमारे यहाँ जीवन-यात्रा के मार्ग अनेक हैं, साधन पृथक्-पृथक्। दिव्यशक्ति से साकार महापुरुष ही सुगम मार्ग से सुपरिचित कराकर लक्ष्य-प्राप्ति करा सकते हैं। आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए तत्वानुशीलन और गुरु का निदर्शन अत्यावश्यक है। उत्तरांचल में एक ऐसे ही महात्मा एवं दिव्यात्मा के दर्शन का सौभाग्य लोगों को प्राप्त हुआ है, जिनके दृष्टिपात से योग-क्रिया के सारे गूढ़तम रहस्य खुल जाते हैं। इतना ही नहीं, त्रिनेत्र भी खुल जाते हैं। बाबा हैड़ाखान ने, जिन्हें शिवस्वरूप अवतारिक महापुरुष कहा जाता है, न केवल अपने देश भारत में, अपितु सुदूर विदेशों में तत्वान्वेषण का मार्ग प्रशस्त किया है। वे कभी साकार, कभी निराकार होकर अपने प्रेमी भक्तों को दर्शन देते रहते हैं। इस पुस्तक के लेखक को, जो भारतीय वायुसेना के बड़े अधिकारी रहे हैं, बाबा के दर्शन हुए। उनके आशीर्वाद से इनका जीवन आनन्दमय हो गया। बाबा हैड़ाखान के सम्पर्क में आने के उपरान्त इन्हें जो रहस्यपूर्ण अनुभव हुए, उनका व्यापक वृत्तान्त इस पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय है। बाबा के अनेक रंगीन तथा श्वेत श्याम चित्रों सहित।

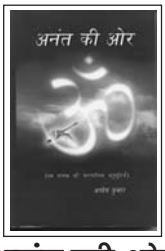

अनंत की ओर

अशोक कुमार

नब्बे रुपये

एक साधक की आध्यात्मिक अनुभूतियों का निचोड़। मानसिक तथा आत्मिक उत्थान से शब्दों में वर्णन करने का प्रयत्न। आध्यात्मिक पथ पर आए हुए गूढ़, अद्भुत, ज्ञानवर्धक और अविस्मरणीय घटना चक्र की अभिव्यक्ति।

नवप्रकाशित ग्रन्थ

उपन्यास

मुंशी रायज़ादा	*लक्ष्मीकान्त वर्मा*	350
कृष्णा	*युगेश्वर*	200
कर्ण की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	350
डालर बहू	*सुधा मूर्ति*	200
गांधारी की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	350
द्रोण की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	300
अमृत संचय	*महाश्वेता देवी*	225
जली थी अग्निशिखा	*महाश्वेता देवी*	125
चार कन्या	*तसलीमा नसरीन*	195
टूटे घोंसले के पंख	*रामकुमार मुखोपाध्याय*	125
A Home at Last	*Mridula Sinha*	400
Lakshmi Bai The Rani of Jhansi	*Vrindavanlal Verma*	400
पांचाली : नाथवती अनाथवत्	*डॉ० बच्चन सिंह*	125

कहानी

बीसवीं सदी की बीस कथाएँ	*आनन्दप्रकाश माहेश्वरी*	200
चाहै अनचाहै	*जय जीऊत*	150
कछुए की तरह	*राजेन्द्र दानी*	125

भाषा

हिन्दी और हम	*विद्यानिवास मिश्र*	125
Grammar at Home	*S.P. Upadhyay S. Bhushan*	400

इतिहास-राजनीति

भारत की अजेय नौसेना	*दत्तात्रय रामचन्द्र केतकर*	175
कश्मीर निरंतर युद्ध के साए में	*लेफ्टिनेंट जनरल के०के० नंदा*	300
सागर स्वामी	*मा०वा० आठवले*	175
उत्तराखण्ड का फौजदारी प्रबन्ध	*प्रफुल्ल पन्त*	125
रक्तरंजित जम्मू कश्मीर	*रवीन्द्र जुगरान*	200
राष्ट्रीय विमर्श का आह्वान	*रामेश्वरप्रसाद मिश्र*	300
वन्देमातरम्	*मिलिंद प्रभाकर सबनीस*	200
प्राचीन भारतीय शासन पद्धति	*अनंत सदाशिव अलतेकर*	125

विज्ञान

51 विज्ञान प्रयोग	*श्यामसुन्दर शर्मा*	150
51 विज्ञान मॉडल	*श्यामसुन्दर शर्मा*	150
टेलीविजन लेखन	*असगर वजाहत : प्रभात रंजन*	150
विज्ञान कथा	*डॉ० एस०एन० घोष*	80

जीवन-चरित संस्मरण

खानखाना नामा	*मुंशी देवीप्रसाद*	250
अमृतपुत्र (विद्यानिवास मिश्र)	*सं० कुमुद शर्मा*	350
वह जो यथार्थ था	*अखिलेश*	125
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150

नाटक

मैथिलीशरण गुप्त के नाटक	*सत्यप्रकाश मिश्र*	350
अग्नि और बरखा	*गिरीश करनाड*	125
ययाति	*गिरीश करनाड*	125
हंसनी	*अन्तोन चैखव*	95
चैरी का बगीचा	*अन्तोन चैखव*	95
कौआ हँकनी (बाल नाटक)	*रवीन्द्र भारती*	20

कविता-गज़ल

अपने जैसा जीवन	*सविता सिंह*	125
जल पथ	*तसलीमा नसरीन*	95
नदी की चीख़ (गज़ल)	*सुलतान अहमद*	95
हर शै बदलती है	*बर्टोल्ट ब्रेस्ट*	150
मिलकर दीप जलायें (बाल कविता)	*जयप्रकाश मानस*	20
एक शब्द उठाता हूँ	*अनन्त मिश्र*	180

निबन्ध : संस्मरण

वह जो यथार्थ था (संस्मरण)	*अखिलेश*	125
भिनसारे की मधुमालती	*रंजना अरगड़े*	125

स्वास्थ्य

आयुर्वेवद और योग (16 मिनट का योग पूरे दिन का उपयोग)	*विनोद वर्मा*	175
कन्या वामा जननी	*डॉ० अरुणकुमार मित्र*	250

गोपालन

गाय	*मुरगन लेन्श*	250

राम-साहित्य

रामायण का काव्यमर्म	*विद्यानिवास मिश्र*	225

साहित्य समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : आलोचना का अर्थ : अर्थ की आलोचना	*रामस्वरूप चतुर्वेदी*	120
कबीर की कविता	*योगेन्द्र प्रताप सिंह*	175
सियारामशरण गुप्त : रचना एवं चिन्तन	*ललित शुक्ल*	300

INFORMATION TECHNOLOGY

Secure or Perish	*Yashwant Deva*	400

वाग्दोह

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

दो सौ रुपये

प्राचीन भारतीय शासन पद्धति

अनंत सदाशिव अलतेकर

सजिल्द : 250 रुपये **अजिल्द : 125 रुपये**

उत्तर प्रदेश सरकार की राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकें

उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रारम्भ से माध्यमिक कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण कर रखा है। पाण्डुलिपि शासन देती है। प्रकाशक शासन की शर्तों पर उन्हें प्रकाशित करते हैं। शिक्षा विभाग द्वारा उपलब्ध कराई हुई पाण्डुलिपियाँ कितनी दोषपूर्ण होती हैं, शासन उसकी समीक्षा करने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता। बेसिक शिक्षा निदेशालय के पाठ्य-पुस्तक विभाग द्वारा प्रकाशित हमारा इतिहास और नागरिक जीवन में बताया गया है कि देश में अभी तक केवल सात आम चुनाव हुए हैं, छठीं पंचवर्षीय योजना चल रही है। मतदाता की आयु 21 वर्ष है जबकि 18 वर्ष हो गई है, दिल्ली और पांडिचेरी केन्द्र प्रशासित राज्य हैं। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जिन्हें 70 वर्ष पूर्व इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों की गोली खानी पड़ी उसे आतंकवादी संगठन का संस्थापक कहा गया।

प्राथमिक शिक्षा पर जो सरकार करोड़ों रुपये खर्च कर रही है उसकी शिक्षा का स्वरूप क्या है? प्रकाशकों से अधिकाधिक राजस्व प्राप्त करना ही शासन का लक्ष्य है। सफेद हाथी जैसे अधिकारियों की जमात क्या कर रही है? शिक्षा अनुसंधान विभाग क्या कर रहा है? यदि किसी निजी प्रकाशक की पुस्तक में ऐसी भूलें होती तो क्या नहीं हो जाता। किन्तु संवेदना शून्य शासन से क्या अपेक्षा की जाय?

वाक्सिद्धि

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

एक सौ साठ रुपये

कबीर और भारतीय संत साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

सजिल्द : 180 रुपये **अजिल्द : 100 रुपये**

पिछले पाँच दशकों का अनुभव राष्ट्र को सावधान करता है कि शिक्षा नीतियों का ईमानदारीपूर्वक क्रियान्वयन हो तथा विशेष रूप से विद्यालयों के लिए ऐसी पाठ्यचर्या को विकसित किया जाए जो 'संस्कृति से जुड़ी हो तथा विकास के प्रति निष्ठावान रहे'। समानता, एकरूपता एवं प्रासंगिकता के स्तम्भों पर आधारित दृढ़ता से जुड़े समाज के निर्माण की आवश्यकता को हल्के रूप में नहीं लिया जा सकता। इसे प्राप्त करने के लिए स्वदेशी ज्ञान को शामिल करना एवं भारतीय विचारकों, वैज्ञानिकों, सृजकों तथा समुदायों के योगदान को मान्यता प्रदान करना तथा उसे उचित प्रकार से उल्लेखित करने की आवश्यकता है। यह राष्ट्र से जुड़े होने की भावना तथा देशभक्ति और राष्ट्रीयता की समझ उत्पन्न करेगी जो 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी भावना से ओत-प्रोत होगी। पाठ्यचर्या बोझ को कम करना, प्रशिक्षु के समग्र व्यक्तित्व के विकास की आवश्यकता, मानवाधिकारों तथा मूलभूत कर्तव्यों को आत्मसात करना, सूचना एवं संप्रेषण तकनीकें एवं सार्वभौमीकरण जैसे मुद्दों को अब और अधिक अनदेखा नहीं किया जा सकता। विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में एक ओर चरित्र निर्माण के मुद्दों तथा दूसरी ओर विज्ञान एवं तकनालाजी के एकीकरण पर बहुत गम्भीरता से बहस करनी होगी। भारतीय समाज की बहुलताएँ एवं अनेकताओं से राष्ट्र को अंतर्निहित शक्ति मिलती है जो समाज के हर तबके को आत्मविश्वास देगी। यदि परिवर्तन की प्रक्रिया को हर कदम पर सावधानीपूर्वक जाँचा-परखा नहीं गया तो आवश्यक नहीं कि शिक्षा में सही ढंग से सुधार हो सकेंगे। इसे बहुत ही बारीकी से समझने की जरूरत है कि यह आवश्यक नहीं है कि हर परिवर्तन से सुधार होगा ही। इसे प्राप्त करने के लिए मात्र परिवर्तन का एक हिस्सा बनकर कोई भी संतुष्ट नहीं हो सकता। राष्ट्र को स्वयं परिवर्तन के नेतृत्व के लिए तैयार होना होगा। भारतीय शिक्षा प्रणाली को व्यक्तियों, संस्थाओं, संगठनों एवं निर्णय लेने वालों से उनकी व्यक्तिगत पसन्द-नापसन्द से हटकर, व्यावसायिक प्रणाली तथा सार्थक क्रियान्वयन की रणनीति देने की आश्यकता है। 21वीं शताब्दी में भारत को महाशक्ति बनने के लिए अच्छी शिक्षा ही एक मात्र कुंजी है।

जगमोहन सिंह राजपूत, *निदेशक*
एन०सी०ई०आर०टी०

भारतीय वाङ्मय हिन्दी मासिक पत्र के सम्बन्ध में विवरण

1. प्रकाशन का स्थान : वाराणसी
2. प्रकाशन की आवृत्ति : मासिक
3. मुद्रक एवं प्रकाशक का नाम : अनुराग कुमार मोदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन के लिए)
   राष्ट्रगत सम्बन्ध : भारतीय, पता- विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
4. सम्पादक का नाम : पराग कुमार मोदी
   राष्ट्रगत सम्बन्ध : भारतीय, पता- विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
5. उन व्यक्तियों के नाम-पते
   जो पत्रिका के मालिक हैं : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी विश्वविद्यालय प्रकाशन के लिए इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर लिखी बातें मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार यथार्थ हैं।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

डॉ० डेविड फ्रॉली
(वामदेव शास्त्री)

अनुवाद
केशवप्रसाद कायाँ

सजिल्द : 250.00
अजिल्द : 150.00

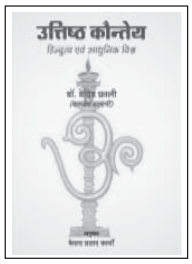

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **मार्च 2001** **अंक : 3**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in